२५८८

अथ चारसेन अनेपावती कुं

संवाद.

चोपाई

दुःखभंजन शरणे रह्या, गुण गाऊं लक्ष्मी ठीमा तणा;
पातक हरन सुख मंगल करो, रतन ज्ञाने बढ़ेला संभरा.

दुहा.

माता मे न करो घणी, नरीया सोम लंडान,
हरिहर सगड़ गणपती, ठीलानो नय भार. १

सेहणार धन स्यामगो, हरन सिला निस्तार,
सट न रहि तज स्याग बिन, लछमी हिये बिचार. २

ध्यान स्याम सखि मनगरे, कृपा बिना न उमंग,
दीन सेवसों नर्थी गा, स्याहली नही संग. ३

छपय.

अन आसोनदी नारह, गोरस सल मेरी रानी;
जिन मेरी ज्यों नय, ध्यान धनगये जिलमाली.
मेरी उमगे लाज, मात लछमीने बिचारी;
ध्यान मान घर रहुँ, सर्मी मेण रेड हमारी.

आज छेल घरें आवे, कहा ईंद्राणी नारी;
आत गोद अब आय, सखी सो नेह हमारी.

दुहो.

मदन नखनी सखिकु, कापण दों घर नीर;
मिज़लो हे ईंद्रानीकु, कछु शुद्ध शरीर.

छंद ओतारकनी चाल.

तजदासीये निरमण नीर दीयो, ऊठके कमला अंगुलनीयां;
कुछ सखीने उबटन लाय दीयो, सोल सिंगार स्यांमा लज कीयो.
चरणा सुंदरी अंग चोळी धरी, सेथे सिंदुर आडज नेलार करी;
चोंची टोडा अने पिछुवा जनन, कांठ घुघरी चार अने घनन
करी अंगोकु हीरा कमर कसी, नथ्यो नेनके शंजन आंत कसी;
तनमनीयुं ने त्रीशी तेज नरी, कुल कंठीने हांसडी हीरे जडी.
चेउ आनगीयांनी तो नेऊ जनी, ऊपरापर गोमती धार धर्‌;
शीपेद छलाने अंगुठी नडी, नथ्यो कानें कलादून गाले जडी
अेसो सोल सिंगार कीये सुंदरी, मानु ऊजवल गंगामें अेनीपरी
रस नवरसुना मीलगी नवरुधी, नयनको रूप अनन राकेन कवि.

दुहो.

सणगार सोल अंगे धर्यो, दरपण लीयो हे हाथ;
मग्न लखे तब मानुनी, देखी रूप सुनाथ.

मैं नारी श्रीकृष्णकी, लछमी मेरो नाम;

शीणगार सोल अंगे सज, चली ईनके धाम. २

सारथीने रथ सजडीयो, लेइ्ये ही तोणार,

पवन वेग कां संचरी, आं ईन दरबार. ३

ढे रुमीटकुनो थाल.

पीछे उठके ईन अयास आली, तब ईनकी [redacted] मीली;
अपने घरकुं सब आवत हे, उष्ठु आरत्नाय जनावत हे.
पिछे उठके आंगण आडु दीयो, जकुल आती पीछानो पीछायी-
यो;
अड्डा यो हे मुज जलझो तडीयो, सिंहासन आसन तैयार कीयो.
अरु रुमकी थाल सो मोती भरी कुल कुल[redacted] तैयार करी;
अज देखत राह पडी सुंदरी, अब क्युं न आवत सतार्जीकरी.

दुहो.

आयत देखी लछमी, उठी ईनकी नार;

करी वधाई मोतीये, [redacted] सार. १

ईशारणीः— ## ढे छपननो थाल.

कुराण गोप गोवाळ, [redacted]री;

कुराण श्रीरको साथ, [redacted]री.

कृ[redacted]र कुराण सकल संसारहे;

मैं [redacted]कुराल सब परिवारहे. १

छप्पय.

ईंतनी आत त्यां हुई, ईंद्र दरबार भरायो;
मीले कोड तेत्रीस, संगे इंद्र ईंद्राणी आयो.
नृत करे त्यां नायका, सुरत रंभा सब धारी;
ताल चंग मृदंग, और उपंगी भारी.
तालातल अरु तान, अनुगम लीला मन लेये;
मीले सकल सुरीजन, ईम मन तरपत होये. १

दुहो.

तार्थेइ त्यां होने लगो, नाचत रंभा ज्यांय;
ईंद्राणीको मन गयो, पीयु सनाछे त्यांय. १

सोरठो.

चतुर नारीके नेन, चित ईंद्राणीको चोर्यो;
तुमने कुंभावेन, पींजर पेमानी वां रह्यो. १

दोहरा.

(तास्मैक [redacted])

धीक कुपात्र कां बोलवो, ज्हां न आदरमान;
धीक [redacted] कां बेठवो, ज्हां न गुनको ज्ञान.
धीक कुपात्र कां बेठवो, ज्यां जेह प्रीत होवाय;

छपो.

ऐसो पितमे लगि, आत लछमीने आीयारी;
आत्र होन घर लगी, लेउ सजि होग कुमारी.
आत्र स्वर्ग घर लगी, ल्हां रंनारे नारी;
आत गोष्ट जन जय, सधी गो लेउ कुमारी. १

दुहो.

सघ मुसाफर फिरत है, आवे सरगुं नाम;
दुषनहि बीरायम तो, नवरी हासे हाम. १

छपो.

ऐसो पितमे लल, आत लछमीने आयारी;
आत्र होन घर लवुं, होग सधी लेउ कुमारी.
ब्रह्माके घर लवुं, ल्हां सावित्री नारी;
आत गोष्ट जन लय, [redacted] कुमारी. १

दुहो.

अल्लातो लांगे छहे, [redacted] पार;
आत गोष्ट हेसी जने, नघरी मीने लनार. १

छपो.

ऐसो पितमे लल, आत लछमीने आयारी;

आऊ शिव पर जचुं; जहां पारवती नारी;
आत गोष्ट जन जच, सपी जो जेऊ हमारी. १

दुहो.

तीन लोक तारन तरन, अगम अगोच्चर ज्याकी रूप;
जयरामे जयरी[illegible] [illegible] सो भूप. १

हरि[illegible] छंद.

नहीं चरणो चलोचणो, न धेनकुं चरावनो;
न बांधणो न [illegible] कु दुहावनो.
न आरचो न कुटचो, न वच्छकुं धवावनो;
न खावनो न पीवनो, न पूतकु दुलावनो. १

दुहा.

हरीहरी तो एक नंदीयो, जाण्यो लोक हरजार;
खाने लगी पाणी पीवे, [illegible]. १
काम सोर्ठ [illegible] या करे, नीराहान [illegible];
जोगी जंगलमे जसे, [illegible]. २
जने त्यां [illegible] चडा चलो, [illegible] गोष्ट चन जय;
पारवतीकुं में मीएं, जीसराजन लोपाय. ३

छंद त्रो [illegible].

जेसो [illegible] पारवतीकुं [illegible];

अपने घरकुं लछ आयत हे, कृष्णकु आदर नाय बनायत हे.

पीछे उठके आंगण जाके दीयो, अकु नाती पीछलो पीछाथ दीयो;

नदीयो मृग [redacted]यो, ताकी उपर रसी डाल दीयो.

अेक पाणीमें [redacted] बहुकूल छाज तैयार करी;

अब हेअत राहे [redacted] क्युं नही जावे सताबीकरी.

दुहो.

[redacted]ी, सले पधारी नार;

कृष्ण लेगी लाए के, कृपा करी अपार. १

छपय छंद.

उग्र[redacted]क गोप गोवाल, कुशल गोकुल गीरधारी;

कुशल आज को ताय, कुशल के बीज दीवारी.

कुशल परराणी राध, कुशल के हलधर लाई;

कुशल नंदको धाम, कुशल के जसोमती माई.

हामजी कुशल कीरता[redacted];

गवरी पूछे सुण लछमी, [redacted] परीवार हे. १

दुहो.

लास्मि-लछमी कहे गवरी सुणो, अेन करो न अडाई;

कहे तुम होनुं जोड़ है, जोड़ मित्र होलाई. १

कुंडो.

गवरी कहे लच्छमी मान, लच्छकुं सबको चहावे;
लच्छ कुं... घर बांधे, लच्छ घड ठोट बनावे.
लच्छकुं ..., लच्छ मके दांत उगावे;
लच्छ ... तारीग, लच्छ घर मल सुलावे.
लच्छको मान सब जक्तमे, चहावत है सब घडीघडी;
कहे गवरी सुण लच्छमी, संसारमें तुं सबसे बडी. १

दुहो.

गवरी कहे सुण लक्ष्मि, भातम भान है लच्छको;
जिस घर नाही लच्छमी, धीक जपतार है तुच्छको. १

छपो.

जब लग नहोती लच्छ, कांन गोवाल कहायो;
जब लग नहोती लच्छ, मात माहियारी [illegible]
जब लग नहोता लच्छ, कानणी ओढी कांणी;
जब लग नहोती लच्छ, गाय गोकुलमें चारी.
जब आई घर लच्छमी, तब तब त्रिलोवनपति;
कहे गवरी सुंण लच्छमी, [illegible] १

दुहो.

आत गोश ओसी बने, फिर जेडे आसन जाय,
ईश्क तेझ नगर हेहैं, नगर फरी घर मांय. २

छपो.

आसन न जेडी जाय, नगर चोरीसधिराये;
अेक कोडीको माल, महीमे लाखांदिखावे.
शींगि सेसी सणातुर, ओर [illegible];
पडे सर्पके हार, ओर आडंबर छाला.
सारी महीको माल, जय जन्नर बिकावे;
कोडी नहीं थे कोय, फेर पीछो घर आवे.
लोरनांधके [illegible] के फेर देखात हे;
[illegible] देखात हे. १

दुहो.

दोलत ओ दरबारमें, बांध्यो छे नहीं बार,
कुछपत [illegible]. १

सोरठो.

मोपे कह्यो जुं जाय, कुछ फिम्या कुं आवना;
तेसे पेडी छांयां, ज पेमांहे समावना. २

छपो.

(लक्ष्मिजी पूछे छे ने पार्वती ज्वाब दे छे.)

तीण मागन पीठे कुंप गयो, [illegible] द्वारे,
पत्रि जेठन पीठे कुंप गयो, [illegible] द्वाधन यारे.
पठ लग्यो पारेतां [illegible] जमुनाके आरे,
अंतर के [illegible].
संभ पन्नन पन कुंप गयो, [illegible] ता,
मृगछाला [illegible] गयो, उनरी गोद समारता. १

दुहो.

[illegible] गयो, [illegible];
मैं तुम पुछुं [illegible] गो है सो कुयां रहे. १
[illegible] सुण [illegible] मी, तें बात कहो मोकु गमी;
मैं पुछत तोकु सुंदरी, बात कहे मोरे स्वी. २

छपो.

रुपी सुरण कुंप गयो, मार मळियारी [illegible],
नाग नायेल कुंप गयो, [illegible] है [illegible].
अणोकु अणत कुंप गयो, रुप [illegible] लायन,
कामनी ओढण कुंप गयो, [illegible].
[illegible],

[redacted] जेसा न. १

दुहो.

गवरी कहे सुण लच्छमी, तुं स यी बात मोपे कहे;

हुं तुं [redacted] हे सभी, तेरो आखिर [redacted] रहे. १

छंद.

[redacted] मी कहे [redacted] तुनरे गवरी, तुंतो जोगीकी नार सदा नपरी;

तेरे जोगी पायाकु [redacted] गे.१

दुहा.

पार्वतिः— तुम जोगीकु जोगी [redacted] आहिर,

घाने [redacted] गीर. २

जोगी जंगलमें [redacted] ने, जनमे सो फकीर;

य [redacted] य ा, दोनुं अेक शरीर. २

[redacted]

लाछमी—तब लाछमी कहे र [redacted] णरे गवरी, तुने बात करी सो तो लगी मरी;

तुने तात को यज्ञ तो जंगडीयो, तुने आपको शरीर छेदाय दीयो.

तुने पथ्थर पेट जनम लीयो, तुने ईलनी जगाई मोगुंय कीयो;

पार्वती—अब [redacted] गुणरे [redacted], तुने बात करी सो तो [redacted]

तुतो ल [redacted] र पाला;

ते [redacted] मच्छ सोलाई ने [redacted] च्छ सोलाई, पंतर मंतर जेन जगाई.

पारि॰ न्नतरु कौस्तुल मंत्र पूरा, यंतर हे सोहै हाथीने घोडा;
नाम्पल ऋेन तो बंल्ला सो तारी, कामदुगा भेद धेनन्नेसारी॰२

दुहो॰

तुं [redacted], पीयर बड़ो परीयार,
म्है गवरी सुण लक्छमी, मैं कहां आंधु तरवार. १

छंद त्रोटक [redacted]

कली सुं रंकुणो डके राय कुं ल्नवे, राय कुं छोडके रंक कु बनावे;
कामनी तुं बड़ी चंचल है नारे, तेरो जगत्तर मैं के से आवे. २

दोहरा॰

सखि [redacted] म्है गवरी सुणो, तुं बडी हमारी साथ;
हुं परसुं पैहुं रभे, तुं [redacted] रो॰ १
गवरि [redacted] भीर तरसेपान;
तीन लोक में कोन है, मोही छोडावनहार॰ २

छंद ोटकनी [redacted]

कजी [redacted] ल्नेड हुरा, हंनु [redacted] भरा;
सखी तेरे मेरे बनताही बनी, तब हो रह्या तेरो मेरो धनी॰१
हो- बंधव लाभता जैन्ह जीये, हाने हुर हराया नहीरे दीये;
तेरे हंस को गो लगाम दीयो, मेरे [redacted] दाये॰२
तेरे इंदकु वैकुंठ वास दीयो, मेरे रावनने तो कैलास लीयो;

तेरे कंथकु [illegible] हाथन दीयो, मेरे शीवने डमरी धन लीयो. ३

तेरे कंथकु मोतीके हार आपे, मेरे शीवने सर्पके हार लीये;

तेरे कंथकु [redacted], मेरे शीवने जनेउ विभूत लीयो. ४

तेरे कंथकु [redacted] शीवने जटा डमरु लीयो;

तेरे कंथकु [redacted] शीवने मुगट बराडो लीयो. ५

तेरे कंथकु पीतांबर दीयो, [redacted] मृगकी छाल लीयो;

तेरे कंथकु मास बसंत दीयो, मे[redacted] फागण मास लीयो. ६

तेरे कंथकु गरुड वाहन दीयो, मेरे शीवने नंदी बेल लीयो;

ऊली [redacted] कु प्याली [illegible]यो. ७

दुहो.

लक्ष्मि-तब लक्ष्मी कहे सुणो गवरी, जेन जिये वाली पीयार;

[redacted] सेणी, मास बसंत के तार. १

छंद त्रोटक [redacted] रास.

जिनता फागण मास बसंत समे, जहां गोविंद गोपी रास रमे,

उडतो पिचकारी रंग केसरकी, छब देख जातो [redacted] चरकी.

रंग गुलाल को लाल ने लाललता, [illegible] खीआन्पेर मेत जलसपता;

घरघर ताल मृदंग मचे, डरु झांझकी बोतसरी धूम मची. १

दुहा.

होवाला दविकादरे, [illegible] लमर [illegible] संत;

पन अंगाप्पन के सेंग, न्यां [redacted]. १

के नु [redacted] मोर;

किन अंगाप्पन निरख्यो नहीं, वाको लाग्य नठोर. २

पार्वति– जेही वसंतकी स्वाकृपी, जेही वसंतको भुप;

हरणें होपी प्रगट हे, पीछे उडती नं ज. ३

वसंतको परसन कर्यो [redacted];

[redacted] कीनुगास. ४

छंद मोटकनी चाल.

ज्मिलता २ [redacted] मने;

जरनां झरनां जकु नीर झरे, यकां गलां सरोवर नीर भरे. १

गौ गन [redacted] ल जेउत जेती करे,

पीउ पीउ बपैयाने मोर करे, लीलांम्बर भूमिक पोते धरे. २

[redacted] नुणता सकु सक्रमी लोक तथा;

घणघणे रेपत घर घणा, तपी श्रावण मासमां नहीरमणा. ३

दुहा.

लक्ष्मि– लक्ष्मी कहे सुण गवरी, तुं लेजी हमारी साथ;

हीर घराबुं टोकरी, जीहां जेनं केलास. १

प[redacted] कैलास मेरे कर्मको, को ग गोडाप्पन हार;

तिन [redacted]. २

दीरा हृदयमां अकु घणी [redacted];

श्यामकुं [redacted] केली. ३

[redacted];

उ[redacted]लच्छमी दरशन दीध. ४

नारद-नारदके लच्छमी र नो, मे[redacted]ने लदी;

व्यास तत्वकुं [redacted] अजघडी. ५

लक्ष्मि-तब लच्छमा कहे नारद र नो, अेकमारी बात;

में गई ती कैलासमें, लेगन लदी मुज साथ. ६

नारद-नारदके लच्छमां सुनो, लदा धेलमा ठोर;

[redacted], शंकर साथे ओर. ७

[redacted];

लदाध लेगाजी आलमें, [redacted]. ८

लराछे न ी नंबजी, पाल नही तं ;

पेत । गवरी का , जाये लएते मंत्र. ९

नाराच छंद.

उमाल उमया ग[redacted];

दृषेक आप आपिया, कु. । [redacted]. १

दुहो.

अर्ध पादपूर्ण करी, । आदर अतीमान;

गवरी कहे नारद सुणो, घर आये भगवान. १

छंद [redacted] याल.

त्यारे बोलीया नारद देव रुषी, तुं तो आद्य शक्ति मां छेरे सती,
अने युं त्रिलोकनो तो मां रु मथी, वुन्थी मोरी नारी कोय नथी
तने भोग भाग्य भुग भ्यार रहे, तारो पार परमेश्वर नाही लहे;
तारे घेर भंडार कुबेर तणा [redacted] कंइ वातमां नाही मणा.
तारा पीउडाने तो पेर नहीं, ते तो सुन्ने केम गमे नसही,
ते तो भ्रासमां [illegible] नठीने रहे [redacted] कोईन नव लहे.

दु.हा.

पारवती – [redacted] सुणो भरथार;
कहे मानी भ्रम मानीति, अर्ध सरे त्यां सार. १
गवरी कहे नारद सुणो, तम पेख्या [illegible] सार;
अघडो घालो भलमहीं, कहे [redacted]. २
स्वभाव अनारद तणो, भणुं उमिया आप;
तमो क्षणुं स्यां [redacted]ां, दीठे ओवो आप. ३

छं[redacted]याल.

शीरीभ मूर्खथी अन्यो आप मूषी, त्यांथी भागीया नारद देव रुषी;
[illegible]

દોહો.

નારદ— નારદ કહે લક્ષ્મિ સુ[redacted] ગયો તમારે કાજ,

ને [redacted]દીપ તણી, તે ને શક્તિયે આપ્યો ત્યાજ. ૧

લક્ષ્મી કહે નારદ સુણો, [redacted] વાત;

શી ન ગયા [redacted]નો નાથ. ૨

છંદ [redacted]પાઈ.

નારદજી એ ઉચરે બોધિ ... ગી, લોકો માથે તપસ્યા કરે છે ઘણી;

ઈશી નારદ આવ્યા છે જ તહાં, ત્રિનેત્ર તપસ્યામાં છે જહાં. ૧

દોહો.

સાચે દસ રાખે નહિં, [redacted];

જેડ બચન એ સ્પ કહું, લીધા કૈલાસે જાય. ૧

છંદ મોર નીચાલ.

નારદ— જોગી ડાયકુ જંગલ ધ્યાન ધરે, જોગી ડાયકુ બન તપસ્યા કરે;

જોગી ડાયકુ કંઠમેં સર્પ ધરે, જોગી ડાયકુ દેહકુ ક્ષાર કરે.

તેરી પાર્વતી તો [redacted] તાસમાં જીવનું કોઈ નહીં;

તેરો નંદી બરાડે ઘાસ નહીં, [redacted] નાથ ચલોને તમે જ તહીં.

એવી નારદ જૂઠી વાત કહી, તારે શંકરને કંઈ સુરતા ગઈ;

ચડી લઈ ... કી કૈ ફરી, ...

त्यारे मातापे [illegible] [illegible] रुंधाथ [illegible] कर्यो.
[illegible] त्यार [illegible] कुंवरी;
घणो गांने पं रो लव करी, घणी धुंटेसी त्यांश आगेरत्नी.
नहांने ते नीरने घास घणां, त्यांतो ओ [illegible] घणो;
त्यारे पारवतीओ [illegible] लीत धरी.
त्यांतो पारवती पीउ पीउ करे, त्यांथी शंकर तेने वचनो धरे;
पीउ शंकर गुनो आपराध कीधो ओ आवी [illegible] जरयो.
हुंतो घातननाएं पीयर तणी, मारे मांदे छे तम सरीखा घणी;
ओयां [illegible] त्यारे शंकरना अंग लीतपीया.
हवे शंकर [illegible] तीने पाद पीयो छे तारी [illegible] ती;
आपणे घेररीने आव्यां लादेम, [illegible]

दुहो.

पारवतीकु बोलीआं, [illegible] त्रोणानाथ;
लादेमकुं जई [illegible] हुं [illegible] १

छंद त्रोटक [illegible]

आपणे देव सेन आव्यां लादेम, [illegible] घातल [illegible] तेतो मुने गमे;
त्यारे ओणीओ [illegible] लीपारीक [illegible] लीपारीकरयो.
ओम बोलतां बोलतां रात थई, त्यारे ओतो रीसाईने [illegible] गई;
[illegible] ओ पीलाइडांई पे [illegible] [illegible] वातकहुं कयो.

दोहरा.

पार्वती-शबरी कहे शंकर सुणो, एक हमारी वात;
कहो मोरा कैलासपति, मोरा वैकुं[illegible]. १
[illegible]र-वनमां जईने तप करूं, धरवा हरीनुं ध्यान;
वनमां [illegible]. २
सहाय आपणे [illegible] थाय,
शंकर कहे सुण पार्वती, [illegible]. ३
पारवती प्रत्ये कहे, [illegible] नाथ;
अघटित ते आचरूं, सदा लक्ष्मीनो साथ. ४
लखण पोषण भगवान छे, [illegible] नाथ;
जगलो [illegible] वै [illegible] नाथ. ५
[illegible]कृष्ण-घेर [illegible]य;
क्रोधातुर थछ देखीने, [illegible] कृष्णजी त्यांय. ६
कृष्ण कहे रूक्मणी सुणो, कोण कहुं तम साथ;
वात तम [illegible] कहुं यथार्थ. ७
[illegible]क्मि-कृष्ण [illegible] कहे, [illegible];
[illegible] सदा [illegible] साथ. ८
कहूं एक [illegible] वीनती, कहोने साची वात;
कहो मोरा [illegible]पति, [illegible]. ९

श्रानुषण—मेहेरामण ने [illegible];

तत्वरूप लूकने वस्यो, [illegible] ओते होय. १०

लंडारो कुबेरनो, [illegible] लाये [illegible];

ओक कुंवानो ओछो, उघाडी [illegible] होय. ११

करी कहे मोटा [illegible], मोटा [illegible] राय;

[illegible] होय ओक्के, [illegible]. १२

[illegible]— [illegible] उमया ओरहे, [illegible];

[illegible]. १३

संपार [illegible] उमया [illegible], [illegible];

[illegible]. १४

[illegible], [illegible] न [illegible];

मोहम [illegible] मुज [illegible], [illegible]. १५

समाप्त.

घोळ.

[illegible], [illegible];

छोडी [illegible], [illegible]. १

[illegible], [illegible];

[illegible]. २

---

१ [illegible]. २ [illegible].